'मंटो की प्रेरक कहानियों से सीख लेने की जरूरत'

नई दिल्ली | वरिष्ठ संवाददाता

इंद्रप्रस्थ महिला महाविद्यालय में शुक्रवार को अनुवाद एवं अनुवाद अध्ययन केंद्र की ओर से जारी पत्रिका कोड के चौथे अंक का विमोचन हुआ। इस दौरान मंटो के लेखन और जीवन पर विस्तृत चर्चा की गई।

साथ ही विचारकों ने कहा कि मंटो की कहानियां हमें उस समय के यथार्थ से रूबरू कराती हैं। पत्रिका का लोकार्पण कॉलेज प्राचार्या डॉ. बाबली मोइत्रा सराफ, संस्कृति कर्मी डॉ. रक्षंदा जलील, कवि एवं चिंतक डॉ. सुकृता पॉल कुमार व कवयित्री अनामिका द्वारा किया गया। पत्रिका की छात्र संपादक आकांक्षा सहारन और ऋतु मेहरा हैं। इस दौरान उन्होंने ज्वलंत घटनाओं से मंटों की कहानियों को जोड़ते हुए उनकी प्रासंगिता बताई।

'सांप्रदायिक हिंसा पर मंटो ने गंभीरता से लिखा था'

जनसत्ता संवाददाता
नई दिल्ली, 13 अप्रैल।

'मंटो हम तक अनुवाद द्वारा ही पहुंचे। उनका मूल लेखन उर्दू में था, लेकिन उन्होंने अपने पाठकों के बीच जगह अनुवाद के द्वारा ही बनाई। अब मंटो को पाठ्यक्रमों में भी शामिल किया गया है। सांप्रदायिक हिंसा को मंटो ने बड़ी गंभीरता और गहनता से लिखा। उन्होंने हिंसा को अपने लेखन का हिस्सा बनाया।' इंद्रप्रस्थ महिला कॉलेज में शुक्रवार को 'दास्ताए-ए-मंटोइयत' कार्यक्रम में रक्षंदा जलील ने ये बातें कहीं। कठुआ और उन्नाव की घटनाओं का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि मंटो ने लिखा कि कैसे शरीर बदले की भावना बन जाता है। और इस बदले की भावना में पिसती औरत ही है।

डॉक्टर सुकृता पॉल कुमार ने कहा कि मंटो

बहुत आधुनिक थे। वो सच्चाई को बोलने में समझौता नहीं करते थे। लेकिन हम आसानी से कर लेते हैं। कॉलेज की प्रधानाचार्या बबली मोइत्रा सर्राफ ने कहा कि मंटो खानाबदोश थे। उन्होंने धर्म, जाति, महिला आदि विषयों पर सच्चाई के साथ लिखा।

कार्यक्रम में अनुवाद एवं अनुवाद अध्ययन केंद्र की ओर से तैयार 'कोड' पत्रिका के चौथे संस्करण जो स्वतंत्रता आंदोलन पर केंद्रित है, का लोकार्पण किया गया।

इस केंद्र की संयोजिका रेखा सेठी ने कहा कि हमारा यह केंद्र सामान्य पाठ्यक्रम का हिस्सा नहीं है। लेकिन इसके जरिए हमने अंतरराष्ट्रीय स्तर के भी सेमिनार करवाए। स्वतंत्रता संग्राम पर आधारित इस पत्रिका को कई भाषाओं में लाना आसान नहीं था। तत्कालीन बड़े नेताओं के बयान तो थे लेकिन जो कहीं नहीं थे और बहुत कुछ कर रहे थे, उन्हें खोजना मुश्किल था। पुराने पुस्तकालयों, अभिलेखागारों से सामग्री इकट्ठा करने में छह महीने से अधिक का समय लगा। हिंदी, अंग्रेजी तो मुख्य भाषाएं हैं ही हमने असमी, हरियाणवी, मैथिली से भी अनुवाद करवाए। कार्यक्रम का आयोजन हिंदी साहित्य सभा एंड पोएट्री क्लब के सहयोग से किया गया था।

10:07 AM 0.00K/s VoLTE 83%
m.jagran.com

दास्तान-ए-मंटोइयत से जीवंत हो उठे मंटो

Fri Apr 13 20:02:00 IST 2018

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली :

इंद्रप्रस्थ महिला विद्यालय में शुक्रवार को दास्तान-ए-मंटोइयत आयोजित की गई। जिसमें मंटो के जीवन से जुड़े रोचक पहलुओं को एक दास्तान के माध्यम से प्रस्तुत किया गया। वहीं इस कार्यक्रम से पहले मंटो के समय व लेखन पर परिचर्चा भी आयोजित की गई।

Google द्वारा विज्ञापन बंद कर दिया

10:07 AM 0.06K/s VoLTE 83%

m.jagran.com

परिचर्चा की अध्यक्षता करते हुए महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. बबली मोइत्रा सराफ ने कहा कि मंटो की कहानियां हमें उस समय के भयानक यथार्थ से रूबरू करवाती हैं। परिचर्चा में बतौर वक्ता डॉ. रक्षदा जलील ने कहा कि मंटो जब जीवित थे, तो उन्हें कोई प्रतिष्ठा नहीं मिली, लेकिन मृत्यु के बाद उन्हें 'मॉडर्निस्ट' और 'प्रोग्रेसिव' जैसे खांचों में रखकर देखा गया। उनकी रचनाएं हमेशा पाठकों को जगाने का काम करती हैं।

कोड के स्वाधीनता संग्राम पर आधारित अंक का विमोचन

महाविद्यालय के अनुवाद एवं अनुवाद अध्ययन केंद्र की पत्रिका 'कोड' के चौथे अंक का विमोचन किया गया। स्वाधीनता संग्राम पर केंद्रित इस अंक में हिंदी-अंग्रेजी के अतिरिक्त तेलगु, मलयालम, बाग्ला, असमिया, उर्दू आदि की रचनाओं को शामिल किया गया है। जबकि अनुवाद विद्या में हरियाणवी, मैथिली, गढ़वाली आदि बोलियों की रचनाओं को भी शामिल किया गया है। पत्रिका के विमोचन कार्यक्रम में महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. बबली मोइत्रा सराफ, संस्कृतिकर्मी डॉ. रक्षदा जलील, कवि एवं चिंतक डॉ. सुकृता पॉल कुमार तथा प्रख्यात कवियत्री अनामिका मौजूद रहीं।

ताज़ा ख़बर

नवाज़ुद्दीन सिद्दीक़ी ने शेयर की Good News, कान फ़िल्म फेस्टिवल तक पहुंची मंटो की कहानी